

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

ويستحث الذاكرة المثقلة بثمار التجربة الحياتية الواسعة، محاولاً تدوين عصابة التجارب والخبرات عبر نصوص نثرية لا تقتصر إلى الضامنين العميقة كما أنها لا تخلو من اللغة الأقرب إلى لغة الأنواع الأدبية المعروفة.

إن هذه النصوص، المتحررة من القيود، هي أشبه بسوح للأسرار الكامنة في أعماق النفس، واحتفاء بالأفكار والآراء التي استخلصها الكاتب خلال تجربته في الحياة المنسوجة مما قرأ وسمع وشاهد، ورغم أن النصوص لا تمتلك سوية فنية واحدة غير أنها تشترك في القدرة على إثارة الدهشة والإعجاب لدى القارئ. يحوي الكتاب عشرات النصوص الصغيرة الحجم، المكونة من عدة أسطر تعبر بصورة ذكية ولماحة وخاطفة عن قضايا ومسائل مهمة ومعقدة بتبسُّط وسلاسة وفق فهمه الخاص لها.

يحاول غالبانو أن يستخلص عبرة أو أمثلة من النصوص التي يدرجها في كتابه، وهو يضيء على حكاياته الصغيرة بعدا ذاتيا وجدانيا، متجنباً الطريقة المدرسية الضجة في التلقين والإملاء، فهو يسرد ما يحول في ذهنه عبر حكاية صغيرة أو حدث ويهدون مشاهداته إزاء قضايا مختلفة يختارها بعناية ليترك للقارئ مهمة استنتاج الهدف المطلوب واستخلاص العبرة المتوخاة من النص، وهو يتناول قضايا إشكالية تتباين وجهات النظر بشأنها لكنه لا يدخل سجالات بل يكتفي بطرح موضوعه من وجهة نظر ذاتية مععمة بالتعاطف الإنساني وبالإحساس العميق بمعاناة الضعفاء والبسطاء في هذا العالم، يكتب، على سبيل

المثال، تحت عنوان (إعلام العولة): "بعد شهر من سقوط البرجين، قصفت إسرائيل جنين. مخيم اللاجئين الفلسطينيين هذا تحول إلى حفرة هائلة، ممتلئة بموتى تحت الأنقاض. حفرة جنين لها حجم حفرة برج نيويورك نفسه. ولكن، كم من الناس ومن فلسطين إلى العراق نرى غالبانو زاوها، غير أولئك المتبقين على قيد الحياة الذين يقبلون الأنقاض بحثا عن ذوقهم؟".

ومن فلسطين إلى العراق نرى غالبانو يتعاطف مع الشعب العراقي الذي خرج من سجن الديكتاتورية ليدخل سجن الإرهاب والتكفير، فنفقوا له تحت عنوان (الإعلام الموضوعي): "العراق كان خطرا على الإنسانية. بسبب صدام حسين سقط البرجان، ويمكن لهذا الطاغية أن يلقى، في أي لحظة، قبلة ذرية عند زاوية بيتك. هذا ما قالوه. وبعد ذلك عرف الأرباب تبين أن أسلحة التدمير الشامل الوحيدة هي الخطابات التي اخترعت وجودها. كذبت هذه الخطابات، وكذب التلفزيون، وكذبت الصحف والإذاعات. ولم تكذب، بالمثل، القنابل الذكية التي بدت بالغة الغباء. لقد مرتقت مدينتين عزلاً. تطايروا أشلاء في القنابل الذكية التي بدت بالغة الغباء. وقالت الصحف والمجلات، في بلد الغزو، وقالت القنابل الذكية التي بدت بالغة الغباء. "الحرب".

يتحدث غالبانو عن مفهوم الفن والإرهاب والبيروقراطية، و ينتقد الأنظمة السياسية، المستبدة، ويكتب عن الزمن، والنكرسيان والحرية والصداقة والحنين والإعلام، والموسيقى، والمباريات الرياضية، والأوطان والذن والمكئة والألموت والخوف والنسيان والاستلاب والصمت والمنفى وكل ما يشكل تفاصيل الحياة ماديا وروحيا، كما انه يبرز

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)

صدا ثقافية (٢٠١٤) : (١٤)